Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-121-126

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 121-126
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

दिगंत बोरा
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय
बोकाखात, असम.

Corresponding Author :

दिगंत बोरा
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय
बोकाखात, असम.

'जयमती कुंवरी' नाटक और प्रथम असमिया फिल्म 'जयमती' : एक अनुशीलन

शोध सार : असमिया सिनेमा को अस्तित्व में लाने का श्रेय ज्योतिप्रसाद आगरवाला को जाता है। उन्होंने सन् 1935 ई. में प्रथम असमिया सिनेमा 'जयमती' बनाई थी। जयमती असमिया समाज और जनजीवन को प्रतिनिधित्व करनेवाली साहसिक वीरांगना है। जिन्होंने अपने पति तथा देश की रक्षा हेतु अपने प्राणों की परवाह न करके लराराजा की सेना के अत्याचार सहती रही। उसी अमानवीय अत्याचार और असहनीय पीड़ा में जयमती की मृत्यु हो जाती है। अपने पति के लिए वह प्राण त्याग करती है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने जयमती की कहानी को प्रथम असमिया सिनेमा के लिए उपर्युक्त समझा और उसी कहानी पर पहली असमिया सिनेमा 'जयमती' बनाई। उन्होंने फिल्म के लिए लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के नाटक जयमती कुंवरी को आधार बनाने के साथ-साथ तत्कालीन इतिहास ग्रंथों से भी सहायता ली है। अपनी फिल्म के अनुकूल उन्होंने पात्र, शैली, परिवेश आदि में परिवर्तन किया है, ताकि फिल्म की कथा अधिक वास्तविक लगे। उन्होंने देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर ही पहली असमिया सिनेमा के लिए जयमती की कहानी का चयन किया।

बीज शब्द : प्रतीकात्मकता, आहोम, असमिया, सिनेमा, जयमती, शोषण, कहानी, नाटक, वीरांगना, जातीय जीवन.

प्रस्तावना : असमिया सिनेमा के उद्भव और विकास में रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। असमिया सिनेमा को अस्तित्व में लाने का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने सन् 1935 ई. में पहली असमिया फिल्म 'जयमती' बनाई। अपनी फिल्म 'जयमती' के लिए उन्होंने लक्ष्मीनाथ बेजवरुवा के नाटक 'जयमती कुंवरी' को आधार बनाया। प्रथम असमिया फिल्म असम की वीरांगना जयमती के जीवन पर आधारित है।

ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने प्रथम असमिया फिल्म के लिए देशभक्ति तथा पति की रक्षा के लिए अपने प्राण का न्योछावर करनेवाली असम की वीरांगना सती जयमती की कहानी को उपयुक्त समझा और उसी कहानी को फिल्म का रूप दिया। "सन 1935 में शुरु हुए असमिया सिनेमा के जन्मदाता रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला है। ज्योतिप्रसाद ने सन् 1935 में असमिया सिनेमा की पहली फिल्म जयमती बनाई थी। ज्योतिप्रसाद आगरवाला असमिया सिनेमा के पितृपुरुष हैं। उन्होंने तेजपुर में चित्रलेखा मूवीटोन कंपनी बनाई और उसी कंपनी के बैनर तले 'जयमती' बनाई। जयमती असमिया साहित्य रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के 1915 में प्रकाशित नाटक 'जयमती कुंवरी' पर आधारित थी।"[1]

प्रथम असमिया फिल्म के लिए कहानी चुनते वक्त ज्योतिप्रसाद आगरवाला के पास अपने नाटक 'शोणित कुंवरी' भी उपलब्ध था। परंतु उन्होंने पहली असमिया फिल्म के लिए 'जयमती कुंवरी' नाटक की कथा को तत्कालीन समाज और परिवेश के अनुकूल समझा। जिस कारण से अपने नाटक 'शोणित कुंवरी' होते हुए भी उन्होंने 'जयमती कुंवरी' नाटक का फिल्मांकन किया। "जिटो समयत ज्योतिप्रसादे 'जयमती' करिवलै लय तेतिया तेउर निजरे 'शोणित कुंवरी' नाटकखन आछिलेइ। किंतु ज्योतिप्रसादे सेइटो विचरा नाछिल। तेउ बिचारिछिल एने एटा काहिनी ज'त असमिया जातीय जीवनर एक साहसिकतापूर्ण चित्र प्रस्फुतित है उठे। बेजबरुवार एइ काहिनी निश्चितभाबे सेइदिशत उपजुक्त आछिल।"[2] ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने प्रथम असमिया सिनेमा के रूप में जयमती कुंवरी की कहानी को फिल्म के लिए उपयुक्त बनाकर जयमती फिल्म का निर्माण किया।

अपूर्व शर्मा लिखते है कि – "आमार बाबे बिबेच्य 'जयमती'र निर्माणर माजत सोमाइ थका सामाजिक तात्पर्य। सेइ समयत महात्मा गांधीर नेतृत्वत देशजुरि होवा साम्राज्य विरोधी जागरणे ज्योतिप्रसादक केवल उत्पेरित कराइ नाछिल, आंतरिकतारे तेउँ ब्रिटिछ साम्राज्य बिरोधी आंदोलनत सक्रियभाबे जड़ित हैछिल। एने गुरुत्वपूर्ण सामाजिक प्रेक्षापटत एइटो अत्यंत स्वाभाविक जे देशजोरा जनजागरणर लगत जड़ित है परा ज्योतिप्रसादर शिल्पी सत्ताइ 'जयमती कुंवरी'क तेउँर कल्पित प्रथम चलचित्रखनर काहिनीर बाबे निर्वाचन करिछिल।"[3] अर्थात तत्कालीन समय में महात्मा गांधी के नेतृत्व में देशभर में हो रहे अंग्रेज विरोधी आंदोलन से ज्योतिप्रसाद केवल प्रभावित ही नहीं थे, बल्कि सक्रिय रूप से भाग भी लिया था। इस आंदोलन से प्रभावित होकर ही ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने जयमती की कहानी को पहली असमिया फिल्म के लिए चुना।

मूल विषय : पहली असमिया सिनेमा का निर्माण साहित्य को आधार बनाकर किया गया। इस दृष्टिकोण से देखे तो असमिया सिनेमा का निर्माण साहित्य के चलचित्र रुपांतरण द्वारा हुआ था। डॉ. प्रदीप बड़ा लिखते है कि – "प्रथम असमिया चलचित्र 'जयमती'खन निर्माण करा हैछिल साहित्यिक आधार करि। तेंते एइ दिशरपरा एइटो स्पष्ट है परे जे असमिया चलचित्रर जन्म हैछिल साहित्यर चलचित्रकरण प्रक्रियारे।"[4]

अपूर्व शर्मा लिखते है कि – "1935 चनत प्रथमखन असमिया चलकित्रर काहिनी हिचापे 'जयमतीर निर्वाचनके एकप्रकारर दुसाहसिक बुलिब पारि। सेइ समयर भारतीय चलचित्रत मनोरंजनधर्मी धर्म काहिनी, पौराणिक कल्प काहिनी बा आबेगसर्बस्ब अबास्तब नाटकर बिपतिते जयमती आछिल एक बुरंजीर बास्तव जड़ित काहिनी।"[5] अर्थात जब भारतीय सिनेमा जगत में मनोरंजनात्मक, पौराणिक, काल्पनिक कहानी की लोकप्रियता थी, ऐसे समय में इतिहास प्रधान कहानी पर प्रथम असमिया फिल्म निर्माण करना एक साहसिक कार्य था।

'जयमती कुंवरी' नाटक को आधार बनाकर फिल्म निर्माण के समय फिल्मकार रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने नाटक में चित्रित पात्र, कथन शैली आदि में फिल्म निर्माण के अनुकूल

परिवर्तन कर लिया था। कुछ नये पात्र का चित्रण किया तो नाटक के लम्बे संवाद को फिल्म के अनुकूल संक्षिप्त भी किये।

'जयमती कुंवरी' नाटक और 'जयमती' फिल्म को निम्न बिंदुओं के आधार पर अनुशीलन किया जा सकता हैं –

1. कहानी : 'जयमती' फिल्म की कहानी रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के नाटक 'जयमती कुंवरी' पर आधारित है। 'जयमती कुंवरी' नाटक की कहानी असम की वीरांगना सती जयमती के जीवन पर आधारित है। 'जयमती कुंवरी' नाटक जयमती की साहसिकता और देश के लिए त्याग की कथा है। वह अपने देश तथा जाति की रक्षा के लिए अपने प्राणों का न्योछावर करती है। वह असहनीय अत्याचार सहती हुई मर जाती है, फिर भी गाठि हाजरिका को अपने पति के बारे में कुछ नहीं बताती है। ताकि बाद में गदापानि देश में शांति स्थापित कर सके। इस नाटक में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने इतिहास के साथ-साथ कल्पना का भी सुंदर समंवय किया है। "जयमती नाटतो बुरंजीर मिहलि नोहोवा धार बिचारिले पोवा नाजाय। कल्पना राज्यर मायाकुंवरीसकलर खेलेरे सैते बुरंजीर घटना इयार सानमिहलि। सेइ बुलि बुरंजीर प्रधान सोतर धाराओ जे एकेबारे इयात छिगिछे एनेओ नहय।"[6] अर्थात 'जयमती कुंवरी' नाटक में नाटककार लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने कल्पना मिश्रित घटना को भी कथा में स्थान दिया है। कल्पना के साथ-साथ इतिहास का सुंदर समंवय हुआ है। जयमती नाटक के बारे में यह नहीं कहा जा सकता है कि कथा में इतिहास पूर्ण रूप से लुप्त हो चुका है।

'जयमती नाटक' की कथा के आधार पर ही ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने अपनी फिल्म जयमती बनायी है। फिर भी कहानी, पात्र, कथन शैली आदि में कुछ बदलाव किए हैं। नाटक की कथा को फिल्म के अनुकूल बनाने के लिए उन्होंने आहोम राजा चुलिकफा तथा उनके शासन काल से संबंधित इतिहास संबंधी तथ्यों का भी अनुशीलन किया है। "जयमतीर आख्यान साहित्यरथी बेजबरुवार 'जयमती कुंवरी' नाटकरपरा जदियो लोवा हैछे तात बहुतो सालसलनि करा हैछे। बिशेषकै डॉ. सूर्यकुमार भूञाँदेवे प्रकाश करा तुंखुङिया बुरंजीर परा लालुकसोला बरफुकन आरु दक्षिणपटिया गाठि हाजरिकार चरित्र जयमती फिल्मत नकै अवतारणा करा हैछे। ..... डॉ. वाणीकांत काकतिदेव आरु डॉ. सूर्यकुमार भूञाँर परामर्शमते आमि रत्नेश्वर महंत्र काहिनी आरु तुंखुङीया बुरंजीर तथ्यर उपरतेइ 'जयमती' फिल्मर आख्यान प्रतिष्ठित करिछिलो।"[7]

रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने अपनी फिल्म 'जयमती' का निर्माण 'जयमती कुंवरी' नाटक के आधार पर किया है। उन्होंने लालुकसोला और गाठि हाजरिका दोनों नवीन पात्रों को फिल्म में चित्रण किया है। जो नाटक में नहीं हैं। फिल्म निर्माण के लिए ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने 'जयमती कुंवरी' नाटक के साथ-साथ तत्कालीन इतिहास से संबंधित ग्रंथों की भी सहायता ली है।

2. चरित्र चित्रण : ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने 'जयमती कुंवरी' नाटक में चित्रित पात्रों को ही फिल्म के अनुरूप निर्माण कर लिया है। उन्होंने दो नवीन पात्रों को फिल्म में स्थान दिया है। 'जयमती' फिल्म में चित्रित प्रमुख पात्र इस प्रकार हैं – जयमती, गदापानि, सेउती, लालुकसोला बरफुकन, गाठि हाजरिका, डालिमी, चुलिकफा या लरा राजा आदि। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने लालुकसोला और गाठि हाजरिका दोनों नवीन पात्रों को फिल्म में स्थान दिया है। जो लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा रचित नाटक 'जयमती कुंवरी' में नहीं हैं। लालुकसोला बरफुकन की चारित्रिक विशेषताएँ 'जयमती कुंवरी' नाटक में चित्रित बुढ़ागोहाँई की विशेषताओं के समान है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने अपनी फिल्म 'जयमती' के लिए चरित्र निर्माण करते समय डॉ. सूर्यकुमार भूञाँ द्वारा रचित तुंखुङिया बुरंजी (इतिहास ग्रंथ) की सहायता ली है। उस ग्रंथ के आधार पर लालुकसोला बरफुकन और गाठि हाजरिका के चरित्र का चित्रण किया है।

'जयमती' फिल्म की नायिका असम की वीरांगना जयमती है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने 'जयमती' फिल्म के लिए लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा

चित्रित जयमती पात्र को ही आधार रूप में लिया है। फिर भी नाटक में चित्रित जयमती और फिल्म में चित्रित जयमती में काफी अंतर दिखाई पड़ता है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने अपनी फिल्म में जयमती को नाटक से अधिक वास्तविक चित्रण किया है। नाटक में चित्रित जयमती में द्विजेंद्रलाल राय कृत छाहजाहान के पात्र पियार का प्रभाव है। परंतु फिल्म में पियार का कोई प्रभाव नहीं है। "पियारर चरित्रर आदर्शरि 'जयमती कुंवरी' नाटकखनत जयमतीर जेनेधरणर चारित्रिक वैशिष्ट देखा पोवा जाय, सेइ चारित्रिक वैशिष्ट चलचित्रखनर जयमती चरित्रटोत संपूर्णकै बाद दिया हैछे।"[8]

नाटक और फिल्म दोनों की नायिका जयमती है। जो अत्यंत साहसिक और दूरदर्शी है। जो अपने पति तथा देश के लिए अपने प्राण त्याग करती है। लरा राजा के आदेश पर गाठि हाजरिका गदापानि के बारे में जानने के लिए जयमती पर अनेक अत्याचार करता है। उसी अत्याचार तथा असहनीय पीड़ा से जयमती की मृत्यु जेरेङा पथार हो गई। नाटक और फिल्म में निर्मित जयमती की चारित्रिक विशेषताओं में अंतर दिखाई पड़ता है। नाटक में जयमती को यह ज्ञात होता है कि लरा राजा की सेना गदापानि को मारने के लिए आ रही हैं। वह गदापानि से कहती है कि उसे भी साथ ले जाय। परंतु फिल्म में यह बात जयमती को अपनी सखी सेउती से पता चलती है। गदापानि जयमती को साथ जाने के लिए कहने पर वह मना करती है। क्योंकि उसे ज्ञात है कि बच्चों के साथ जाने से गदापानि पकड़े जा सकता।

दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है लालुकसोला बरफुकन। मूल नाटक में लालुकसोला बरफुकन नामक यह पात्र नहीं है। यह ज्योतिप्रसाद आगरवाला द्वारा फिल्म में निर्मित यह नवीन पात्र है। "डॉ. सूर्यकुमार भूञाँदेवे प्रकाश करा तुंखुङिया बुरंजीर परा लालुकसोला बरफुकन आरु दक्षिणपटीया गाठि हाजरिकार चरित्र जयमती फिल्मत नकै अवतारणा करा हैछे।"[9] अर्थात ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने तुंखुङिया बुरंजी से यह पात्र अपनी फिल्म में जोड़ा है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि नाटक में चित्रित बुढ़ागोहाँइ और लालुकसोला बरफुकन की चारित्रिक विशेषताओं में समानता है। भले ही नाम अलग अलग है। 'जयमती कुंवरी' नाटक में बुढ़ागोहाँइ की बातें मानकर ही चुलिकफा ने आहोम राजकुमारों को क्षति पहुँचाने का आदेश दिया था। फिल्म में लालुकसोला बरफुकन की बातें मानकर राजा आदेश देता है। लालुकसोला के आदेश पर ही जयमती पर आत्याचार किया गया था, ताकि वह अपने पति गदापानि के बारे में बता दे।

फिल्म में चित्रित अन्य एक महत्वपूर्ण पात्र है – गदापानि। वह नायिका जयमती का पति है। नाटक 'जयमती कुंवरी' में चित्रित गदापानि और फिल्म 'जयमती' में चित्रित गदापानि कोई विशेष अंतर नहीं है। नाटक में पत्नी की के कहने पर पहली बार में ही गदापानि भाग जाने के लिए तैयार हो जाता है। परंतु फिल्म में वह पत्नी और बेटे को छोड़कर जाना कायरता प्रतीक मानकर पहले जाने से मना करता है।

फिल्म में निर्मित अन्य एक नवीन पात्र है – गाठि हाजरिका। इस पात्र का उल्लेख लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के नाटक 'जयमती कुंवरी' नहीं है। इस पात्र को उन्होंने सूर्यकुमार भूञाँ के तुंखुङिया बुरंजी से लिया है। गाठि हाजरिका लालुकसोला बरफुकन का प्रमुख सहायक है। लालुकसोला बरफुकन के कहने पर जेरेङा पथार में उसी ने जयमती पर अत्याचार किया था। ताकि जयमती अपने पति गदापानि के बारे में बता दे। ज्योतिप्रसाद आगरवाला गाठि हाजरिका के बारे में लिखते हैं कि – "गाठि हाजरिका हल लालुकसोलार सोँहात। लालुकर सकलो कुप्रवृत्तिक रूप दिछिल गाठि हाजरिकाइ। .... नाना प्रकारर शास्ति दि गाठि हाजरिकाइ जयमतीक जेरेङात मारे। कोनो नाट्यकारे एइ चरित्रटोक नाटकत रूप निदिलेउ एइटो बुरंजीमुलक चरित्र।"[10] अर्थात ज्योतिप्रसाद आगरवाला अपनी फिल्म के पात्र गाठि हाजरिका के प्रमाणिकता के बारे में बताते हुए लिखते है कि गाठि हाजरिका लालुकसोला बरफुकन का सहायक था। लालुकसोला बरफुकन के सभी कु-कर्मों को सम्पूर्ण करने का काम गाठि हाजरिका ही करता था। उसी ने अपने अत्याचार से जयमती को जेरेङा में मारा था। भले

ही किसी भी नाटककार ने गाठि हाजरिका को अपने नाटक में स्थान नहीं दिया है। फिर भी यह पात्र प्रामाणिक है। यह आहोम इतिहास से लिया गया पात्र है।

अन्य एक महत्वपूर्ण पात्र है दिलिहियाल फुकन। नाटक 'जयमती कुंवरी' में इस पात्र का केवल उल्लेख मात्र है। परंतु ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने इस पात्र की भूमिका को समझते हुए फिल्म में चित्रण किया है। वह गदापानि को भागने में सहायता करता है। उनकी प्रेमिका सेउती जयमती को बताती है कि गदापानि को पकड़ने के लिए राजा की सेना आ रही है। वह गदापानि को भागने में मदद करता है।

डालिमी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा निर्मित एक काल्पनिक पात्र है। जिसे ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने भी अपनी फिल्म में स्थान दिया है। "डालिमी बेजबरुवार मानसकन्या। बुरंजीर आँचोर तात नाइ। किंतु बेजबरुवाइ एने अभिनवभाबे चरित्रटि अंकण करिछे जे ज्योतिप्रसादे निजे जे एइ छोवालीजनीर प्रेमत परिछिल तात कोनो संदेह नाइ।"11 अर्थात डालिमी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा निर्मित एक काल्पनिक पात्र है। उस पात्र पर इतिहास का कोई प्रभाव नहीं है। परंतु नाटककार ने उस काल्पनिक पात्र को अभिनव रूप से नाटक 'जयमती कुंवरी' में चित्रण किया है। जिस कारण से ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने भी अपनी फिल्म में इस पात्र को स्थान दिया है। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने 'जयमती' फिल्म में डालिमी को देखकर कहते हैं कि – "मोर नाटकखनर सरहभाग मानुह आरु तेउँलोकर चरित्र ऐतिहासिक। किंतु डालिमी संपूर्णरुपे मोर मानस प्रतिमा। मइ केतियाउ भबा नाछिलो से डालिमीक मोर मानसपटर बाहिरेउ इह जनमत देखिबले पाम। किंतु जयमती फिल्मर डालिमीये मोर हपोन दिठक करिले।"12 अर्थात वह कहते हैं कि मेरे नाटक के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक है। परंतु डालिमी मेरी कल्पना का पात्र है। उसमें इतिहास का कोई प्रभाव नहीं है। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि इस जनम में मेरी कल्पना के अलावा डालिमी को देख सकूँगा। परंतु मेरे यह स्वप्न जयमती फिल्म के पात्र डालिमी द्वारा वास्तव में रूपायित हुआ।

डॉ. प्रदीप बड़ा जयमती फिल्म के पात्रों के बारे में लिखते है कि – "जयमती कुंवरी नाटकर राजमाउ, बरगोहाँइ, पिथु चाङमाइ, लाइ-लेचाइ आदि चरित्रसमूहर चलचित्रकरणत बिशेष पार्थक्य परिलक्षित नहय। अवश्य संपूर्ण चलचित्रखनर अभाबर बाबे चरित्रायणर अध्ययनत स्वाभाविकते किछु असुविधा आहि परिछे।"13 अर्थात वह लिखता है कि 'जयमती कुंवरी' नाटक के दूसरे पात्र राजमाउ, बरगोहाँइ, पिथु, लाइ-लेचाइ आदि चरित्र निर्माण में फिल्म में कोई अंतर दिखाई नहीं पड़ता है। संपूर्ण फिल्म के अभाव के कारण फिल्म के पात्रों के अध्ययन में समस्या आयी है।

संवाद : संवाद नाटक का एक अनिवार्य तत्व है, जिसकी सहायता से नाटककार अपनी बातों को दर्शकों तक पहुँचाते है। परंतु संवाद फिल्म के एक तत्व होने पर भी फिल्म के लिए अनिवार्य नहीं है। चार्ली चेप्लिन जैसे कलाकार की फिल्में बिना संवाद के भी आज की फिल्मों से अधिक लोकप्रिय हैं। 'जयमती' फिल्म में प्रयुक्त संवादों के बारे में लिखते हुए फिल्मकार ज्योतिप्रसाद आगरवाला लिखते हैं कि – "मइ जयमती छबिखन आरु तार अभिनेताक एकेबारे बास्तविक दृष्टिरे परिचालना करिछो जिटो सकलो इंग्लिस, आमेरिकान आरु रुछीय प्रथम श्रेणी फिल्मर लक्षण। सेइ कारणे मोर जयमतीये राजसभात बक्तृता दि – आनठाइत भावप्रवण बक्तृतारे गोरोहनि मरा नाइ।"14 ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने अपनी फिल्म के पात्रों को वास्तविक बनाने हेतु 'जयमती कुंवरी' नाटक के लम्बे संवादों को फिल्म के अनुकूल संक्षिप्त कर लिया था। नाटक के पात्रों के लम्बे स्वगत कथन को अपनी फिल्मों में प्रयोग न के बराबर किया है। उन्होंने पात्रों को वास्तविक बनाने के लिए वास्तवधर्मी संवादों का प्रयोग किया है। नाटक के सभी संवादों को वह फिर से लिखा है, ताकि संवाद फिल्म के अनुकूल हो।

परिवेश निर्माण : परिवेश निर्माण की दृष्टि से फिल्म नाटक से अधिक सुविधाजनक है। नाटक में एक मंच पर कथा के परिवेश को निर्माण करना पड़ता है, परंतु

फिल्म में सजीव परिवेश का निर्माण करने में फिल्मकार सक्षम है। फिल्म में परिस्थिति का सजीव एवं जीवंत निर्माण किया जाता है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने जयमती फिल्म में नाटक के आधार पर ही परिवेश का निर्माण किया है। फिर सुविधानुसार तथा फिल्म की गुणवत्ता की रक्षा हेतु नवीन परिवेश का भी निर्माण किया है। फिल्म देखने के बाद फिल्म के परिवेश के बारे में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा कहते है कि – "दुइ घण्टा आहोम राज्यत सोमाइ थका जेन लागिछिल।"[15] अर्थात लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा फिल्म 'जयमती' के परिवेश निर्माण की सार्थकता के बारे में बताते है कि फिल्म देखकर ऐसा लगा मानो दो घण्टे आहोम राज्य में घुम रहे थे। फिल्मकार ने आहोमकालीन परिवेश का सजीव तथा जीवंत निर्माण किया था।

निष्कर्ष : रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा कृत 'जयमती कुंवरी' नाटक के आधार पर प्रथम असमिया फिल्म 'जयमती' बनाई थी। प्रथम असमिया फिल्म निर्माण के लिए ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने वीरांगना जयमती की जीवन कथा को चुना। उस समय ज्योतिप्रसाद आगरवाला के पास अपना नाटक 'शोणित कुंवरी' भी था। जयमती ने अपने पति तथा देश की रक्षा हेतु अपने प्राणों का न्योछावर कर देती है। वह लराराजा की सेना द्वारा दी गयी असहनीय पीड़ा सहती रही, फिर भी आहोम राज्य में पुनः शांति स्थापन करने और अपने पति की रक्षा हेतु कुछ नहीं बतायी। पीड़ा सहती हुई जेरेङा पथार में जयमती की मृत्यु हो गई। ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने 'जयमती कुंवरी' नाटक के आधार पर फिल्म निर्माण किया। परंतु लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के नाटक 'जयमती कुंवरी' के अतिरिक्त तत्कालीन इतिहास संबंधित ग्रंथों की भी सहायता ली। लालुकसोला बरफुकन और गाठि हाजरिका दोनों नवीन पात्रों को तुंखुङिया बुरंजी से लिया है। ये दोनों पात्र 'जयमती कुंवरी' नाटक में नहीं है। नाटक बुरागोहाँइ नामक एक पात्र है, जिसकी सभी चारित्रिक विशेषताओं की समानता लालुकसोला बरफुकन से है। परिवेश निर्माण, संवाद में फिल्मकार ज्योतिप्रसाद आगरवाला ने फिल्म के अनुकूल परिवर्तन किये हैं। फिल्म में जयमती स्वयं एक प्रतीकात्मक पात्र बन गया है। वह अन्याय और अत्याचार के विरोध जनता की आवाज का प्रतिनिधित्व बनकर सामने आती है।

संदर्भ सूची :

1. सं मृत्युंजय, सिनेमा के सौ वर्ष, अनिरुद्ध प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 2021, पृष्ठ – 435.
2. प्रदीप बड़ा, साहित्यर चलचित्रकरण आरु असमिया चलचित्र, प्रकाशक : प्रदीप बड़ा, प्रथम संस्करण : 2022, पृ – 67.
3. अपूर्व शर्मा, असमिया चलचित्रर छाँ-पोहर, आँक-बाँक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण :2022, पृ – 18.
4. प्रदीप बड़ा, साहित्यर चलचित्रकरण आरु असमिया चलचित्र, प्रकाशक : प्रदीप बड़ा, प्रथम संस्करण : 2022, पृ – 64.
5. अपूर्व शर्मा, शब्द, प्रतिमा, साहित्य, चलचित्र, आँक-बाक प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019, पृ – 70.
6. प्रदीप बड़ा, साहित्यर चलचित्रकरण आरु असमिया चलचित्र, प्रकाशक : प्रदीप बड़ा, प्रथम संस्करण : 2022, पृ – 64.
7. वही, पृ – 66.
8. वही, पृ – 68.
9. वही, पृ – 68.
10. वही, पृ – 71.
11. वही, पृ – 67.
12. अरुणलोचन दास, एरि अहा दिनबोरत असमिया सिनेमा, शिशु शशी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2017, पृ – 23.
13. प्रदीप बड़ा, साहित्यर चलचित्रकरण आरु असमिया चलचित्र, प्रकाशक : प्रदीप बड़ा, प्रथम संस्करण : 2022, पृ – 75.
14. प्रदीप बड़ा, साहित्यर चलचित्रकरण आरु असमिया चलचित्र, प्रकाशक : प्रदीप बड़ा, प्रथम संस्करण : 2022, पृ – 76.
15. वही, पृ – 81.

•